अनुक्रमणिका

क्रम. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण (Language, Dialect, Script and Grammar)	7
2.	वर्ण-विचार (Phonology)	12
3.	शब्द-विचार (Morphology)	18
4.	संज्ञा (Noun)	25
5.	लिंग (Gender)	30
6.	वचन (Number)	36
7.	सर्वनाम (Pronoun)	40
8.	विशेषण (Adjective)	46
9.	क्रिया (Verb)	55
10.	क्रियाविशेषण (Adverb)	61
11.	काल (Tense)	67
12.	संधि (Joining)	72
13.	समास (Compound)	81
14.	कारक (Case)	87
15.	उपसर्ग (Prefix)	92
16.	प्रत्यय (Suffix)	98
17.	शब्द-भंडार (Word Vocabulary)	104
18.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	113
19.	वाच्य (Voice)	120
20.	पद-परिचय (Parsing)	125
21.	पदबंध तथा वाक्य-विचार (Phrases and Sentence)	129
22.	विराम-चिह्न (Punctuation Marks)	136
23.	अलंकार (Figure of Speech)	141
24.	सार-लेखन (Precis Writing)	146
	स्वमूल्यांकन पत्र-1	149
	स्वमूल्यांकन पत्र-2	151

EDTONE INTERNATIONAL

अध्याय 1

भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

(Language, Dialect, Script and Grammar)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! भाषा के माध्यम से हम अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों की बातों को स्वयं समझते हैं लेकिन जब भाषा नहीं थी तब व्यक्ति पक्षियों तथा जानवरों की तरह आवाज़ें निकालकर अपनी बातें दूसरों तक पहुँचाते थे।

वर्तमान समय में भी ऐसी आवाज़ों और संकेतों का प्रयोग किया जाता है; जैसे– अंपायर या रेफरी खेल में, शिक्षिका द्वारा बच्चों को चुप रहने का संकेत करना, सेना में किसी अभियान के समय साथी सैनिकों से बातचीत करना आदि।

शिक्षिका का बच्चों को चुप रहने का संकेत

रेफरी द्वारा आउट होने का संकेत

धीरे-धीरे भारतीय समाज में लोग कागज़ के विकास के पूर्व अच्छी-अच्छी बातों को, कहानियों को, सूक्तियों को ताम्रपत्र पर, भोजपत्र पर, ताड़पत्र पर पांडुलिपियों के रूप में लिखकर सुरक्षित रखने लगे।

जब कागज़ का विकास हुआ, तो लोग कई प्रकार के पेड़-पौधों की टहनियों से, मोर पंख से कलम बनाकर स्याही से कागज़ पर लिखकर अपनी या दूसरों की बातों को स्थायित्व प्रदान करने लगे।

भोजपत्र पर पांडुलिपि

ताम्रपत्र पर पांडुलिपि

ताड़पत्र पर पांडुलिपि

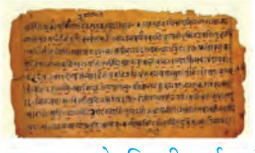

कागज पर हाथ से लिखी गई पांडुलिपि

वर्तमान में कंप्यूटरों के माध्यम से हार्डडिस्क, वेब पेज, मोबाइल फोन की मेमोरी आदि में लिपियों को संभालकर रखा जाता है।

इस प्रकार हम भाषा के बारे में कहेंगे कि –

भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों और विचारों को दूसरों के सामने प्रकट कर सकते हैं और दूसरों के मन के भावों और विचारों को स्वयं समझ सकते हैं।

भाषा के अंग : भाषा के मूलतः दो अंग बताए गए हैं। उन अंगों के भी कुछ भाग होते हैं, जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन नीचे किया गया है–

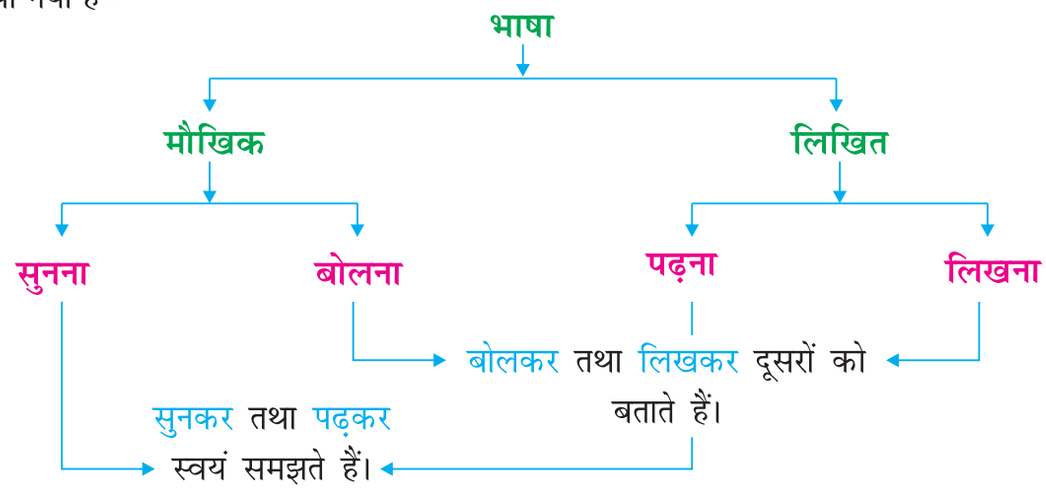

- **मौखिक भाषा–** ऐसी भाषा जिसे हम स्वयं सुनकर समझते हैं तथा दूसरों को बोलकर अपनी बात बताते हैं; जैसे– शिक्षक द्वारा पढ़ाना, नेताजी द्वारा भाषण देना, पंडित जी द्वारा कथा कहना आदि।
- **लिखित भाषा–** ऐसी भाषा जिसे हम लेखन के माध्यम से पढ़कर तथा लिखकर समझते हैं; जैसे- अखबार, पुस्तक, साइन बोर्ड से पढ़कर स्वयं समझना तथा लेख, श्यामपट्ट, कॉपी आदि पर लिखकर दूसरों को समझाना।

हिंदी भाषा: एक दृष्टि

हिंदी भाषा का विकास संस्कृत भाषा के अपभ्रंश शब्दों से, पालि या प्राकृत भाषा के अपभ्रंश शब्दों से मिलकर हुआ है। इसे संवैधानिक स्वरूप आजादी के बाद 14 सितंबर, 1949 को देकर इसे राजभाषा घोषित किया गया।

अब तक बाईस भाषाओं को संवैधानिक मान्यता मिल चुकी है। जो भारतीय संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक में संकलित हैं–

असमिया, बांग्ला, कश्मीरी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मणिपुरी, कोंकणी, मराठी, नेपाली, उड़िया, संस्कृत, उर्दू, नेपाली,तमिल, तेलुगू, सिंधी, बोडो, डोगरी, हिंदी, मैथिली, संथाली।

इस समय हिंदी भाषा खाड़ी देश, सूरीनाम और वेस्टइंडीज़ में बोली जाती है। इसके अलावा यह पाकिस्तान, नेपाल, कंबोडिया, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, पूर्वी एशिया के कई देशों में भी बोली जाती है। इतना ही नहीं, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, जर्मनी, यूरोप के अनेक देशों के साथ-साथ खाड़ी देशों में हिंदी भाषा का पठन-पाठन भी किया जाता है। प्रत्येक 14 सितंबर को भारत में हिंदी दिवस मनाया जाता है। प्रत्येक 10 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा वर्ष 2006 में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस की घोषणा एवं शुरुआत की गई।

वैसे प्रथम हिंदी दिवस का आयोजन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में किया गया था।

उपभाषा तथा बोली

उपभाषा– एक सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को उपभाषा कहा जाता है। उपभाषा में कुछ क्षेत्रीय रचनाएँ जैसे– लघुकथा, कहानी, कविता आदि लिखी जाती हैं। उदाहरण स्वरूप– ब्रजभाषा में–सूर साहित्य; अवधी भाषा में रामायण, बजरंग बाण आदि तथा बिहार में 'अंगिका' भी उपभाषा है। इन सभी उपभाषाओं की मुख्य भाषा हिंदी है।

बोली– भाषा का ऐसा स्वरूप जो छोटे क्षेत्र में बोलने के लिए प्रयोग में लाई जाती है, उसे बोली कहते हैं। इसमें किसी भी साहित्य की रचना नहीं की जाती है। सामान्य लोग इसे केवल बोलते और समझते हैं। इसे जनसामान्य की भाषा भी कहा जाता है।

हिंदी और इसकी बोलियाँ एवं उपभाषा

पश्चिमी हिंदी	–	ब्रजभाषा (उपबोली), बुंदेली (आल्हा-ऊदल का वर्णन), कन्नौजी, बाँगरू (हरियाणवी बोली), खड़ी बोली आदि।
पहाड़ी हिंदी	–	गढ़वाली, कुमाऊँनी, कुल्लुई (मंडियाली)
पूर्वी हिंदी	–	छत्तीसगढ़ी, बघेली, अवधी (उपबोली)
बिहारी हिंदी	–	मगही, भोजपुरी, अंगिका

लिपि

भाषा की मौखिक ध्वनियों को जिन चिह्नों के माध्यम से लिखते हैं, उसे लिपि कहते हैं।

विश्व की सभी भाषाओं की लिपियाँ हैं, कुछ समान हैं, तो कुछ बिल्कुल अलग होती हैं।

भाषाएँ	लिपियाँ
हिंदी / संस्कृत	देवनागरी
गुजराती	देवनागरी
मराठी	देवनागरी
उर्दू	नस्तलीख़, फ़ारसी
डच	रोमन लिपि
जापानी	कानजी (चीनी मानचित्र), जापानी
पंजाबी	गुरुमुखी
मलयालम	मलयालम
अंग्रेज़ी	रोमन
चीनी	चीनी (भावचित्र)
स्पेनिश	स्पेनिश, लैटिन

व्याकरण

हिंदी भाषा को शुद्ध रूप से लिखने तथा बोलने संबंधी नियमों का बोध कराने वाले शास्त्र को व्याकरण शास्त्र कहते हैं।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को भाषा तथा उसके भेद सहित, लिपि संबंधी जानकारी प्रदान करें एवं व्याकरण शास्त्र के महत्व को भी विस्तारपूर्वक समझाएँ।

EDITONE INTERNATIONAL

शुद्ध और अशुद्ध वाक्य प्रयोग के बारे में हम इस प्रकार समझ सकते हैं–

हम खाता हूँ।	(अशुद्ध)
मैं खाता हूँ।	(शुद्ध)
जाता मैं घर हूँ।	(अशुद्ध)
मैं घर जाता हूँ।	(शुद्ध)
राजभाषा हिंदी भारत की है।	(अशुद्ध)
भारत की राजभाषा हिंदी है।	(शुद्ध)

हिंदी साहित्य

(क) गद्य– इस विधा में लेख, कहानी, नाटक, आलेख, निबंध, आत्मकथा, यात्रा वर्णन, कथा आदि शामिल हैं।

(ख) पद्य– इस विधा में दोहा, चौपाई, कविता, सवैया, छंद आदि शामिल हैं।

आइए, पुनरावृति करें

- हिंदी भाषा का प्रारंभिक स्वरूप सांकेतिक था।
- भाषा में दो प्रमुख तत्व शामिल हैं– मौखिक तथा लिखित।
- **मौखिक** रूप में– सुनना–बोलना तथा **लिखित** रूप में– पढ़ना–लिखना शामिल है।
- हिंदी हमारी राजभाषा है।
- प्रत्येक 14 सितंबर को देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- प्रत्येक 10 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।
- व्याकरण से भाषा शुद्ध रूप में बोली और लिखी जाती है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) उपभाषा किसे कहते हैं?

(ख) लिपि से आप क्या समझते हैं?

(ग) बिहार में बोली जाने वाली कुछ भाषाओं के नाम बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) भाषा की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

(ख) हिंदी दिवस को किस दिन और क्यों मनाया जाता है?

(ग) अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस की शुरुआत कब और किस प्रकार की गई?

(घ) भाषा और बोली में क्या अंतर है?

EDITONE INTERNATIONAL

2. दी गई भाषाओं को उनकी लिपि के साथ लिखिए।

जापानी –		बंगाली –	
डच –		मलयालम –	
चीनी –		गुजराती –	
अंग्रेज़ी –		पंजाबी –	

3. वाक्यों को पढ़कर उनके आगे सही (✓) या गलत (×) के निशान लगाइए।

(क)	सिनेमा देखते समय हम किस भाषा का प्रयोग करते हैं?	☐ मौखिक	☐ लिखित	☐ कोई नहीं
(ख)	क्रिकेट के दौरान अंपायर कौन-सी भाषा का प्रयोग करता है?	☐ लिखित	☐ मौखिक	☐ सांकेतिक
(ग)	चित्र के बारे में लिखना भाषा का कौन-सा रूप है?	☐ पढ़ना	☐ लिखना	☐ बोलकर
(घ)	हम दूसरों को अपनी बात कैसे बताते हैं?	☐ बोलकर	☐ लिखकर	☐ सुनकर
(ङ)	सरिता पूजा के समय मंत्रोच्चारण करती है।	☐ लिखित	☐ मौखिक	☐ कोई नहीं

4. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए।

(क) भाषा को लिखने के तरीके को क्या कहा जाता है?

☐ मौखिक ☐ लिखित ☐ लिपि ☐ श्रवण

(ख) व्याकरण का कार्य है?

☐ भाषा को बताना ☐ भाषा को ठीक करना ☐ गलती में सुधार करना ☐ कुछ नहीं

(ग) स्पैनिश भाषा की लिपि कौन-सी है?

☐ डच ☐ लैटिन ☐ रोमन ☐ मंदारिन

(घ) भाषा के कितने रूप होते हैं?

☐ दो ☐ चार ☐ तीन ☐ पाँच

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. व्याकरण शास्त्र तथा साहित्य शास्त्र एक-दूसरे से किस प्रकार परस्पर भिन्नता रखते हैं? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची तैयार करके उनकी लिपियों का उल्लेख कीजिए। तथा पता कीजिए कि भारत के कितने राज्यों में हिंदी भाषा बोली जाती है।

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार हिंदी के उच्चारण में तथा लेखन में एकरूपता होती है, ठीक वैसे ही हमारे मन, कर्म तथा विचारों में एकरूपता होनी चाहिए।

EDITONE INTERNATIONAL

अध्याय 2

वर्ण–विचार (Phonology)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! प्रत्येक उच्चरित ध्वनि के लिए एक विशेष प्रकार के चिह्न की आवश्यकता होती है। ये लिखित चिह्न ही वर्ण कहलाते हैं। इन्हीं उच्चरित ध्वनियों (वर्णों) को लिपिबद्ध किया जाता है; जैसे– यदि हम 'विद्यालय' बोलें तो इसमें जो ध्वनियाँ या वर्ण सम्मिलित हैं, वे हैं–

प्रकाश = प्+र+अ+क्+आ+श्+अ = **7** वर्णों के मिलने से 'विद्यालय' शब्द बना है। अतः हम 'वर्ण' के बारे में यह भी कह सकते हैं कि–

'वर्ण' वह मूल ध्वनि है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं।

वर्णमाला

वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी की वर्णमाला इस प्रकार है–

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	

अं, अः ← अयोगवाह

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र	

ड़, ढ़ ← अतिरिक्त व्यंजन

य, र, ल, व ← अंतःस्थ व्यंजन

श, ष, स, ह ← ऊष्म व्यंजन

क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ← संयुक्त व्यंजन

हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं।

आइए, इनका विस्तारपूर्वक अध्ययन करते हैं–

EDITION INTERNATIONAL

स्वर

जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है अर्थात् वे स्वतंत्र वर्ण होते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वरों की संख्या ग्यारह होती है– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के भेद-

स्वर के तीन भेद होते हैं– (क) ह्रस्व स्वर (ख) दीर्घ स्वर (ग) प्लुत स्वर

(क) ह्रस्व स्वर– ऐसे स्वर जिन्हें उच्चारित करते समय सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है– अ, इ, उ, ऋ।

(ख) दीर्घ स्वर– ऐसे स्वर जिन्हें उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वर से अधिक समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। दीर्घ स्वरों की संख्या सात होती है– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

(ग) प्लुत स्वर– क्योंकि ग्यारह स्वरों में से चार ह्रस्व तथा सात दीर्घ स्वर हैं। प्लुत स्वर केवल उच्चारण में लगने वाले समय को लेकर वर्गीकृत किए गए हैं। प्लुत स्वरों के उच्चारण में दोनों स्वरों से अधिक समय लगता है। इसे किसी को दूर से बुलाने के लिए या मंत्रोच्चारण के समय उच्चरित किया जाता है; जैसे– आओ३, ओ३म्, हे मोहन३ आदि। यहाँ जिस वर्ण पर तीन गुना समय लगता है, उसके सामने हिंदी की गिनती '३' लिख देते हैं।

व्यंजन

ऐसे वर्ण जिन्हें स्वर की सहायता से उच्चारित किया जाता है, व्यंजन कहलाते हैं; जैसे– 'काम' शब्द का उच्चारण करें तो इसमें क्+(आ)+म्+(अ) अर्थात् स्वर मिले हैं। 'क' का उच्चारण करते समय क्+(अ) स्वर मिला है।

व्यंजन के भेद-

व्यंजन के तीन भेद हैं– स्पर्श व्यंजन, अंत:स्थ व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन। आइए, इनका विस्तारपूर्वक अध्ययन करते हैं-

(क) स्पर्श व्यजंन : जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के अलग-अलग स्थानों को स्पर्श करती है, स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। इसमें पहले पाँच वर्ग के व्यंजन आते हैं, जो इस प्रकार हैं–

(क-वर्ग)	क	ख	ग	घ	ङ
(च-वर्ग)	च	छ	ज	झ	ञ
(ट-वर्ग)	ट	ठ	ड	ढ	ण
(त-वर्ग)	त	थ	द	ध	न
(प-वर्ग)	प	फ	ब	भ	म

(ख) अंत:स्थ व्यंजन : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी भाग को पूरी तरह से स्पर्श नहीं करती है, उन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है– य, र, ल, व।

(ग) ऊष्म व्यंजन : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में मुँह से रगड़ खाने के पश्चात् वायु में गरमी-सी (ऊष्मा) उत्पन्न होती है, ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। इनकी संख्या भी चार है– श, ष, स, ह।

संयुक्त व्यंजन– ऐसे व्यंजन जिनका निर्माण एक से अधिक व्यंजनों के संयोग से होता है, उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या भी चार होती है। ये हैं– क्ष = (क्+ष), त्र = (त्+र), ज्ञ = (ज्+ञ), श्र = (श्+र)।

EDITONE INTERNATIONAL

अयोगवाह– अं तथा अः को 'अ' के साथ क्रमशः अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (:) जोड़कर लिखा जाता है, इन्हें आयोगवाह वर्ण कहा जाता है। इसकी शुरुआत तो स्वर (अ) से होती है, किंतु बाद में अनुस्वार (अ+ङ्) तथा विसर्ग (अ+ह) यानी व्यंजन जोड़ा जाता है। इसीलिए अयोगवाह न तो स्वर की श्रेणी में आते हैं और न ही व्यंजन की श्रेणी में।

अयोगवाह के भेद -

(क) अनुस्वार (ं) : स्वरों तथा व्यंजनों की शिरोरेखा के ऊपर अनुस्वार बिंदु के रूप में लगाते हैं; जैसे– अंग, अंत, नींद, क्यों आदि।

(ख) विसर्ग (:)– विसर्ग का चिह्न (:) किसी भी वर्ण के दाहिने ओर दो बिंदु के रूप में लगाया जाता है तथा इसे 'अह' के रूप में उच्चारित किया जाता है; जैसे– अतः, प्रातः, नमः आदि।

अनुनासिक का प्रयोग– स्वर सानुनासिक होते हैं, इन्हें स्वर तथा व्यंजन दोनों के ऊपर चंद्रबिंदु के रूप में लगाया जाता है; जैसे–आँत, दाँत, आँख आदि। जब यह व्यंजन वर्णों पर स्वर की मात्राओं के साथ लगाया जाता है, तो यह बिंदु रूप (ं) में प्रयोग किया जाता है।

हल् चिह्न का प्रयोग– व्यंजन वर्णों के नीचे हल् चिह्न (्) का प्रयोग किया जाता है। यह तब किया जाता है, जब किसी वर्ण को अ-रहित दिखाना होता है; जैसे– भाषाविद्, शास्त्रविद्, आत्मसात् आदि। हल् चिह्न जब किसी वर्ण के अंत में लगता है, तो इसे हलंत चिह्न कहते हैं; जैसे– अर्थात्।

आगत ध्वनियाँ

ऐसी ध्वनियाँ जिन्हें विदेशी शब्दों से हिंदी भाषा में शब्दशः लिया गया है, उन्हें आगत ध्वनियाँ कहते हैं। वर्तमान में नवीन मानक वर्तनी के अनुसार तीन ध्वनियाँ आगत ध्वनियाँ हैं, जो इस प्रकार हैं–

(क) ऑ ध्वनि (ॅ , ॅ)– इस चिह्न का प्रयोग अंग्रेज़ी ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण हेतु प्रयोग में लाया जाता है; जैसे– डॉक्टर, टॉफी, कॉफी, स्टॉप आदि।

(ख) नुक़्ते का प्रयोग (ज़) वर्ण के साथ– ऐसे शब्द जिन्हें उर्दू, फारसी, तथा अरबी भाषा से लिया जाता है, उनके सही उच्चारण के लेखन में 'ज' वर्ण के नीचे बिंदी (ज़) का प्रयोग जाता है। इसके लगाने से अर्थ में अंतर भी स्पष्ट होता है; जैसे–

सजा (सजावट)	सज़ा (दंड)	जरा (बुढ़ापा)	ज़रा (थोड़ा-सा)
राज (शासन)	राज़ (रहस्य)		

(ग) नुक़्ते का प्रयोग-(फ़) वर्ण के साथ– जैसे–

ज़िंदा, राज़, फ़ीस, ग़रीब, ज़ब्त, ज़ोर आदि।

फन (साँप का फन), फ़न (हुनर, प्रतिभा)

वर्णों का उच्चारण स्थान

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ	अ, आ, क, ख, ग, घ, ह	कंठ्य
तालु	इ, ई, च, छ, झ, ञ, य, श	तालव्य
दंत	त, थ, द, ध, न, ल, स, ज़	दंत्य
मूर्धा	ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष	मूर्धन्य
ओष्ठ	उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ्य

स्थान	वर्ण	नाम
दंतोष्ठ	व, फ़	दंतौष्ठ्य
नासिका	अं, ङ, ञ, ण, न, म	नासिक्य
कंठओष्ठ	ओ, औ	कंठौष्ठ्य
कंठतालु	ए, ऐ	कंठतालव्य

'र' वर्ण के विविध रूप

'र' वर्ण के तीन रूप होते हैं, इससे शब्दों के अर्थ और उच्चारण में भिन्नता आती है।

1. **रेफ (र्‍)–** यदि कोई 'र' वर्ण स्वररहित (र्) है और उसके बाद कोई व्यंजन स्वर सहित आता है तो 'र्' वर्ण अगले व्यंजन के ऊपर लग जाता है; जैसे–

   क् + अ + र् + म् + अ (स्वर सहित व्यंजन) = कर्म।
   स्वर रहित

   श् + अ + र् + म् + अ = शर्म

   ध् + अ् + र् + म् + अ = धर्म

2. **पदेन (⁄)–** जब स्वर रहित व्यंजन के बाद स्वर सहित (र) आता है, तो 'र' वर्ण अपने पूर्व के व्यंजन के पैरों में पड़ जाता है; जैसे–

   ग् + र् + आ + म् + अ = ग्राम। प + र् + अ+ भ् + आ + त् + अ = प्रभात

3. **पदेन (ट–ड वर्ण)–** ट, ठ, ड वर्ण जब अ रहित हों और उसके बाद 'र' वर्ण अ सहित हो, तो 'र' वर्ण ट, ठ, ड वर्ण के नीचे 'र' वर्ण (‸) रूप में लग जाता है; जैसे–

   ट् + र् + अ + क = ट्रक ड् + र् + आ + म + आ = ड्रामा।

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

1. **स्पर्शी व्यंजन–** ऐसे वर्ण जिन्हें उच्चारण करते समय जीभ या ओंठ दूसरे भाग को स्पर्श करते हैं, उन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं; जैसे– क ख ग घ ङ, ट-वर्ग, त-वर्ग, प-वर्ग आदि।
2. **संघर्षी व्यंजन–** इन्हें उच्चारण करने पर वायु दो उच्चारण स्थानों के बीच से घर्षण करती हुई बाहर निकलती है। ये व्यंजन हैं– ख़, फ़, ज़, श, ष, स, ह।
3. **स्पर्श-संघर्षी व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिन्हें उच्चारण करने के दौरान मुख के कोई दो भाग परस्पर स्पर्श करने के बाद तुरंत अलग न होकर परस्पर संघर्ष करते हैं। ये व्यंजन हैं– च, छ, ज, झ।
4. **नासिक्य व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय वायु मुख और नाक दोनों से बाहर निकलती है, उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं।
   ये व्यंजन हैं– अं, ङ, ञ, ण, न, म।
5. **पार्श्विक व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिन्हें, उच्चारण करने के दौरान मुख से निकलने वाली वायु उच्चारण स्थानों को स्पर्श न करके उसके बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। केवल 'ल' व्यंजन इसका उदाहरण है। वायु जीभ और तालु के पास से होकर निकल जाती है।
6. **प्रकंपी व्यंजन–** ऐसे व्यंजन वर्ण जिन्हें उच्चारण करते समय मुख में उच्चारण स्थान पर कंपन होता है। 'र' व्यंजन के उच्चारण में ऐसा होता है कि जीभ और मसूड़े के पास कंपन उत्पन्न होता है।
7. **उत्क्षिप्त व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिन्हें उच्चारण करते समय जीह्वा उठ जाती है। इसके उदाहरण हैं– ड़, ढ़।
8. **अर्ध-स्वर व्यंजन–** इस प्रकार के व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय उच्चारण स्थान वायु को रोकने के लिए थोड़ा ऊपर उठते हैं, किंतु वायु उनका स्पर्श नहीं कर पाती है। ये व्यंजन हैं– य, व।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को वर्ण, स्वर तथा व्यंजन आदि में भेद बताएँ तथा उन्हें वर्ण के विभिन्न रूपों से अवगत कराएँ।

महाप्राण– जब किसी व्यंजन को मुख से वायु प्रवाह के साथ बोलते हैं, तो वे महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं; जैसे– ख, घ, झ और फ।

अल्पप्राण– ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करने में अपेक्षाकृत कम वायु की आवश्यकता पड़ती है। ये व्यंजन हैं–

क च ट त प ग ज ड द ब न म र ल ड़।

सघोष और अघोष व्यंजन

1. **सघोष व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय वायु फेफड़ों से न निकलकर स्वर तंत्री से टकराती हुई निकलती है, उन्हें सघोष कहते हैं। ये व्यंजन हैं–

ग घ ङ ज ज़ झ ञ ड ढ ण ड़ ढ़ द ध न ब भ म य र ल व ह।

2. **अघोष व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु, स्वरतंत्री से टकराती हुई नहीं निकलती है, उन्हें अघोष व्यंजन कहते हैं। ये हैं–

क ख च छ ट ठ त थ प फ श स।

द्वित्व व्यंजन– दो समान व्यंजन (एक पूरा और दूसरा आधा) से बने संयुक्त को द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

जैसे–
- क्क – चक्कर, मक्का
- त्त – कुत्ता, उत्तर, पत्ता
- द्द – गद्दा, रद्दी, चद्दर
- प्प – पप्पू, चप्पू, गप्पू
- च्च – सच्चा, बच्चा, कच्चा
- ज्ज – सज्जन, लज्जा, पिज्जा
- न्न – पन्ना, खन्ना, चवन्नी

आइए, पुनरावृति करें

- वह ध्वनि जिसका हम उच्चारण करके लिखते हैं, वर्ण कहलाते हैं। यह ध्वनि की सबसे छोटी इकाई होती है।
- वर्णों का क्रमिक एवं व्यवस्थित रूप वर्णमाला कहलाता है।
- **स्वर–** ये स्वतंत्र एवं पूर्ण होते हैं। इनके उच्चारण में किसी की सहायता नहीं ली जाती है।
- स्वर के तीन भेद हैं– ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत।
- **व्यंजन–** इनका उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है।
- व्यंजन के भी तीन भेद होते हैं– स्पर्श, अंत:स्थ एवं ऊष्म।
- 'र' वर्ण के तीन रूप होते हैं– रेफ़, पदेन, पदेन टवर्ग।
- उच्चारण के आधार पर वर्ण आठ प्रकार के होते हैं– स्पर्शी व्यंजन, संघर्षी व्यंजन, स्पर्श-संघर्षी व्यंजन, नासिक्य व्यंजन, पार्श्विक व्यंजन, प्रकंपी व्यंजन, उत्क्षिप्त व्यंजन तथा अर्ध-स्वर व्यंजन।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वर्ण किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) वर्ण कितने प्रकार के प्रकार के होते है?

(ग) स्वरों के भेद बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) व्यंजन किसे कहते हैं? परिभाषित कीजिए।

(ख) स्वरों को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

(ग) स्वर तथा व्यंजन वर्णों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(घ) अनुनासिक किसे कहते हैं? लिखिए।

2. दिए गए स्वरों को उनके भेद के नीचे लिखिए।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

ह्रस्व स्वर – .....

दीर्घ स्वर – .....

अयोगवाह – .....

3. संयुक्त व्यंजन तथा द्वित्व व्यंजन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

4. दिए गए वाक्यो में सही वाक्य पर सही (✓) तथा गलत (×) का निशान लगाइए।

(क) हिंदी वर्णमाला में सब मिलाकर 52 वर्ण होते हैं। ☐

(ख) व्यंजनों का उच्चारण स्वतंत्र एवं पूर्ण होता है। ☐

(ग) ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में सबसे अधिक समय लगता है। ☐

(घ) दीर्घ स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दोगुना समय लगता है। ☐

5. दिए गए शब्दों में से शुद्ध शब्द का चुनाव कीजिए।

(क)	☐ कुँआ	☐ कूआँ	☐ कुआँ	☐ कुँआँ
(ख)	☐ आचल	☐ आँचल	☐ आचँल	☐ आंचल
(ग)	☐ गँगा	☐ गगां	☐ गंगा	☐ गंगं
(घ)	☐ र्दद	☐ र्दर्द	☐ दरद	☐ दर्द

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. यदि भाषा में हुई गलतियों में सुधार नहीं लाया जाएगा तो क्या भाषा संपूर्ण रूप से विकसित हो पाएगी? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. कक्षा में छात्रों से स्वर, व्यंजन तथा इनके भेद वाले शब्द पूछें। सही बताने पर शाबाशी दें, गलत बताने पर उन्हें समझाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

हम जैसा बोलते है, वैसा ही लिखते हैं, जो हमारे विश्वास को बढ़ाता है। इसी प्रकार हमें एक-दूसरे के प्रति भरोसा रखने से विश्वास बढ़ता है, जो कि अच्छे रिश्ते की पहचान होती है।

EDUCONE INTERNATIONAL